नईदुनिया

नेपाल पुलिस ने मांगा फोन रिकार्डिंग का अधिकार

काठमांडू

नेपाल पुलिस ने अपराध अनुसंधान के उद्देश्य से सरकार से काल इंटरसेप्शन यानी फोन काल को रियल टाइम में सुनने का अधिकार देने की मांग की है। यह अधिकार मिलने के बाद पुलिस संदिग्ध व्यक्तियों की फोन पर होने वाली बातचीत को तत्काल सुन और रिकार्ड कर सकेगी।

नेपाल पुलिस के प्रवक्ता अभिनारायण काफ्ले ने बताया कि पुलिस की रणनीतिक योजना में काल इंटरसेप्शन को भी शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि गंभीर अपराधों में संलिप्त या फरार आरोपियों की गतिविधियों और उनके संपर्कों की जानकारी हासिल करने के लिए उनकी बातचीत की निगरानी आवश्यक हो सकती है।

काफ्ले के अनुसार, जो व्यक्ति जघन्य अपराध में शामिल हैं या फरार हैं, वे किससे और क्या बातचीत कर रहे हैं, यह सुनना जरूरी हो सकता है। उन्होंने कहा कि पुलिस की जांच को तकनीक-अनुकूल और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से रणनीतिक योजना तैयार कर उसे गृह मंत्रालय के समक्ष पेश किया गया है।

नेपाल में फोन इंटरसेप्शन का अधिकार देने का मुद्दा नया नहीं है। इससे पहले देश की एकमात्र खुफिया एजेंसी राष्ट्रीय अनुसंधान विभाग को यह अधिकार देने का प्रयास किया जा चुका है। तत्कालीन प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान वर्ष 2019 में राष्ट्रीय सभा में दर्ज नेपाल विशेष सेवा विधेयक में पहली बार इस तरह का प्रावधान शामिल किया गया था। वर्ष 2020 में राष्ट्रीय सभा ने विधेयक पारित कर इसे प्रतिनिधि सभा में भेज दिया था। हालांकि, नागरिकों की गोपनीयता के अधिकार के उल्लंघन की आशंका को लेकर इसका व्यापक विरोध हुआ। विरोध के बाद विधेयक को आगे नहीं बढ़ाया गया। बाद में ओली नेतृत्व वाली सरकार के ही कार्यकाल में वर्ष 2025 में नागरिकों के फोन काल, मैसेज, वीडियो और अन्य डिजिटल सामग्री की निगरानी, अनुवीक्षण तथा टैपिंग की अनुमति देने वाले प्रावधानों सहित एक नया विधेयक लाने की कोशिश की गई थी। विधेयक के मसौदे में यह व्यवस्था प्रस्तावित थी कि यदि किसी अन्य माध्यम से सूचना जुटाना संभव न हो और सूचना तत्काल प्राप्त नहीं करने पर देश को नुकसान पहुंचने की आशंका हो, तो संबंधित महानिरीक्षक की संतुष्टि के आधार पर संदिग्ध व्यक्ति या संस्थाओं की बातचीत की निगरानी की जा सकती है। मसौदे के अनुसार, संचार माध्यमों या अन्य माध्यमों से होने वाली बातचीत, आडियो-वीडियो सामग्री, इलेक्ट्रानिक संकेत या विवरण की निगरानी, अनुवीक्षण या इंटरसेप्शन किया जा सकता था। इसके लिए संबंधित महानिरीक्षक अपने प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में अधीनस्थ अधिकारियों को लिखित आदेश देने का अधिकार रखता।

न्यूज ब्रीफ

नेपाल में सरकारी नीतियों से असंतुष्ट नौकरशाहों के धड़ाधड़ इस्तीफे

काठमांडू। नेपाल में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के वरिष्ठ नेता बालेन्द्र शाह के नेतृत्व में दो-तिहाई बहुमत की सरकार बनने के बाद से हो रहो सिविल सर्विस कर्मचारियों के इस्तीफों में तेजी आ गई है। सरकार की प्रस्तावित नीतियों और कार्यशैली से असंतुष्ट होकर सचिव से लेकर निचले प्रशासनिक स्तर तक के कर्मचारी पद छोड़ रहे हैं। सूचना एवं संचार मंत्रालय के सचिव डा. कमलप्रसाद पोखरेल और प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद कार्यालय के सचिव बाबूराम अधिकारी ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया। सरकारी प्रवक्ता सस्मित पोखरेल ने बताया कि हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में दोनों अधिकारियों के इस्तीफे स्वीकृत कर लिए गए। पोखरेल का 13 दिन पहले ही सूचना तथा संचार मंत्रालय में तबादला किया गया था। उनकी सेवा अवधि अभी करीब एक वर्ष से अधिक बाकी थी। वह इससे पहले राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के प्रमुख सांख्यिकी अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद कार्यालय के सचिव बाबूराम अधिकारी अगस्त के अंतिम सप्ताह में अनिवार्य सेवानिवृत्ति होने वाले थे। सरकार के संघीय निजामती सेवा विधेयक के मसौदे को आगे बढ़ाए जाने के बाद कर्मचारियों में असंतोष और बढ़ गया है। प्रस्तावित व्यवस्था के तहत 55 वर्ष की आयु पूरी कर चुके तथा 30 वर्ष की सेवा अवधि पूरी करने वाले कर्मचारियों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति देने की योजना बनाई जा रही है।

उत्तराखंड के पूर्ण साक्षर राज्य बनने पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने दी बधाई

देहरादून। केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने उत्तराखंड को 'उल्लास-नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' के तहत पूर्ण साक्षर राज्य घोषित किए जाने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और प्रदेशवासियों को बधाई दी। उत्तराखंड को यह उपलब्धि 8 जुलाई 2026 को मिली थी। केंद्रीय मंत्री ने मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में कहा कि यह उपलब्धि उनके नेतृत्व, प्रशासनिक प्रतिबद्धता और प्रदेशवासियों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद राज्य ने पूर्ण साक्षरता हासिल कर प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि 'उल्लास' औपचारिक शिक्षा से वंचित वयस्कों को आधारभूत साक्षरता, जीवन कौशल और डिजिटल दक्षता प्रदान करता है। मुख्यमंत्री धामी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्ण साक्षर राज्य बनना प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। यह उपलब्धि सरकार, शिक्षा विभाग, शिक्षकों, स्वयंसेवकों और जनता की सामूहिक भागीदारी का परिणाम है।

रावलपिंडी में जीएचक्यू के मुख्य गेट पर ताबड़तोड़ फायरिंग, एक जवान सहित हमलावर ढेर

रावलपिंडी। पाकिस्तान के रावलपिंडी से एक बड़ी और सनसनीखेज खबर सामने आई है। यहां स्थित पाकिस्तानी सेना के जनरल हेडक्वार्टर (जीएचक्यू) के मुख्य गेट के बाहर भारी हथियारों से लैस एक हमलावर ने अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। व्यस्त समय में हुए इस हमले से सुरक्षा एजेंसियों में हड़कंप मच गया। मुस्तैद सुरक्षाबलों की जवाबी कार्रवाई में हमलावर को मौके पर ही ढेर कर दिया गया, जिससे वह सैन्य परिसर के अंदर घुसने में नाकाम रहा। हालांकि, इस भीषण गोलीबारी के दौरान पाकिस्तान सेना का एक जवान ड्यूटी पर शहीद हो गया, जबकि दो अन्य सुरक्षाकर्मी गंभीर रूप से घायल हो गए जिन्हें तुरंत मिलिट्री अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्रारंभिक जांच और घटनास्थल से बरामद सामान के आधार पर आशंका जताई जा रही है कि हमलावर एक बड़े पैमाने पर आत्मघाती हमले को अंजाम देने की फिराक में था। उसके पास घातक हथियारों के साथ संदिग्ध विस्फोटक सामग्री भी होने की बात सामने आई है। घटना के तुरंत बाद एलीट काउंटर-टेररिज्म यूनिट्स, स्पेशल फोर्सेज और भारी सैन्य बलों ने पूरे जीएचक्यू जोन और आसपास के इलाकों को पूरी तरह से अपने घेरे में ले लिया।

जर्मनी के हाइडेलबर्ग ने दर्शन को बनाया आम जनजीवन का हिस्सा

हाइडेलबर्ग

आधुनिक दुनिया में जर्मनी का हाइडेलबर्ग एक ऐसा शहर है, जिसने दर्शन को केवल पुस्तकों और विश्वविद्यालयों तक सीमित न रखकर उसे आम जनजीवन का हिस्सा बना दिया है। करीब एक लाख 63 हजार की आबादी वाला हाइडेलबर्ग नेकर नदी के किनारे और सुंदर पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है। यह शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ समृद्ध बौद्धिक विरासत के लिए भी प्रसिद्ध है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी के अनेक शहर भारी तबाही का शिकार हुए, लेकिन हाइडेलबर्ग का ऐतिहासिक स्वरूप काफी हद तक सुरक्षित रहा। यही वजह है कि यहां की पुरानी इमारतें, संकरी गलियां, कैफे और पब आज भी सदियों पुराने यूरोपीय सांस्कृतिक माहौल की झलक प्रस्तुत करते हैं। हाइडेलबर्ग की सबसे बड़ी पहचान यहां स्थित फिलोसोफेनवेग यानी फिलासफर्स वाक है। लगभग दो किलोमीटर लंबा यह शांत पैदल मार्ग होली माउंटेन की ढलानों पर नेकर नदी के दूसरी ओर बना हुआ है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह रास्ता केवल घूमने का स्थान नहीं, बल्कि चिंतन और आत्ममंथन का केंद्र माना जाता है। यहां चलते हुए हर कदम पर इतिहास और दर्शन का एहसास होता है। मार्ग के किनारे लगी पत्थर की पट्टिकाओं पर महान दार्शनिकों के विचार, कविताएं और प्रेरक संदेश अंकित हैं, जो आगंतुकों को सोचने और जीवन के गहरे अर्थ तलाशने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्नीसवीं सदी में हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, विद्वान और विद्यार्थी दिनभर के अध्ययन और अध्यापन के बाद अक्सर इसी मार्ग पर टहलने आते थे।

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक जार्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल भी यहां लंबी सैर करते थे। माना जाता है कि उनके अनेक महत्वपूर्ण दार्शनिक विचारों को आकार देने में इस शांत वातावरण की बड़ी भूमिका रही। नेकर नदी का शांत प्रवाह, सामने दिखाई देता ऐतिहासिक हाइडेलबर्ग किला और चारों ओर फैली हरियाली गहन चिंतन के लिए आदर्श वातावरण तैयार करती थी। इस पहाड़ी की विशेष जलवायु भी इसे अनोखा बनाती है। जर्मनी की ठंडी जलवायु के बावजूद यहां अंजीर के पेड़, भूमध्यसागरीय वनस्पतियां और कई दुर्लभ फूल आसानी से पनपते हैं। यही प्राकृतिक वातावरण इस स्थान को और अधिक आकर्षक बनाता है। बीसवीं सदी के प्रसिद्ध अस्तित्ववादी दार्शनिक कार्ल जैस्पर्स ने भी अपने जीवन का बड़ा हिस्सा हाइडेलबर्ग में बिताया और यहां की बौद्धिक संस्कृति को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। आज भी हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय के आसपास स्थित पुराने कैफे और पब बौद्धिक चर्चाओं के केंद्र बने हुए हैं। यहां छात्र और अध्यापक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता, आधुनिक समाज की चुनौतियों और मानव अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों पर गंभीर विमर्श करते दिखाई देते हैं। हाइडेलबर्ग यह संदेश देता है कि महान विचार केवल पुस्तकालयों या बंद कमरों में नहीं जन्म लेते, बल्कि प्रकृति के बीच शांत वातावरण में गहन चिंतन से विकसित होते हैं।

जंगल से जा रही महिला को अजगर ने निगला, पेट चीरकर निकाला गया शव

जकार्ता। इंडोनेशिया के पश्चिम सुलावेसी प्रांत से एक बेहद खौफनाक घटना सामने आई है, जहां 50 वर्षीय महिला की विशाल अजगर के हमले में मौत हो गई। महिला की पहचान फरीदा के रूप में हुई है। वह चार बच्चों की मां थीं और अपने घर के पास स्थित स्थानीय बाजार में खाना बेचने के लिए जंगल के रास्ते से जा रही थीं। इसी दौरान एक करीब 20 फीट लंबे अजगर ने उन पर हमला कर दिया। जानकारी के मुताबिक, अजगर ने पहले महिला के पैर को जकड़ा और इसके बाद उसके शरीर को बुरी तरह लपेट लिया। माना जा रहा है कि सांप की पकड़ में दम घुटने से महिला की मौत हो गई। इसके बाद अजगर ने उनके शव को निगल लिया।फरीदा जब देर शाम तक घर नहीं लौटीं तो उनके पति नोनी को चिंता हुई। उन्होंने ग्रामीणों और स्थानीय अधिकारियों को सूचना दी। इसके बाद ग्रामीणों ने जंगल में महिला की तलाश शुरू की। खोजबीन के दौरान उन्हें एक विशाल अजगर दिखाई दिया, जिसका पेट असामान्य रूप से फूला हुआ था। इसके बाद लोगों को शक हुआ कि महिला इसी सांप का शिकार हुई हैं। ग्रामीणों ने अजगर को पकड़ने के बाद उसके पेट को काटकर खोला। अंदर महिला का शव मिला। इसके बाद उनके अवशेषों को बाहर निकाला गया और धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार किया गया। घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया।

गर्मी से बचने उत्तर कोरिया की सरकार ने दी डाग मीट सूप पीने की सलाह

प्योंगयांग

आजकल उत्तर कोरिया में रिकार्ड तोड गर्मी पड रही है, जहां तापमान 36.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। यह देश के इतिहास का सबसे अधिक दर्ज तापमान है। असहनीय गर्मी से निपटने के लिए किम जोंग उन की सरकार ने अपने नागरिकों को डाग मीट सूप (कुत्ते के मांस का सूप) पीने की सलाह दी है।

इसे गर्मियों का पारंपरिक और पौष्टिक भोजन बताया जा रहा है, जिसे सामबोक नामक गर्मियों के सबसे गर्म दौर, जिसे अंग्रेजी में डाग डेज आफ समर भी कहा जाता है, से जुड़ा एक पुराना रिवाज़ माना जाता है। सरकारी मीडिया का दावा है कि यह शरीर को ठंडक प्रदान करता है और गर्मी से होने वाली बीमारियों से बचाता है।

प्योंगयांग जनरल हास्पिटल के डाक्टरों ने भी गर्मी से बचाव के लिए डाग मीट सूप को पौष्टिक भोजन करार दिया है। सरकारी मीडिया ने एक पुरानी कहावत का भी जिक्र किया कि डाग डेज के दौरान अगर डाग मीट सूप पैर पर भी गिर जाए तो वह दवा जैसा असर करता है, जिससे इसकी सांस्कृतिक अहमियत का अंदाजा लगाया जा सकता है। हालांकि, सलाह केवल डाग मीट सूप तक सीमित नहीं है।

सरकार ने तरबूज, खीरा, मूंग और पर्याप्त पानी जैसे ठंडक देने वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करने का भी सुझाव दिया है। इसके अलावा, समग्येतांग नामक चिकन सूप, जिसमें जिनसेंग, चिपचिपा चावल और जुजूब शामिल होते हैं, को भी गर्मी से राहत पाने के लिए फायदेमंद बताया गया है। लोगों को तैराकी और खुले में व्यायाम करते समय सावधानी बरतने और हाइड्रेट रहने की भी सलाह दी गई है।

सरकारी मीडिया इस स्थिति का उपयोग किम जोंग उन की छवि को मजबूत करने के लिए भी कर रहा है। उन्हें ऐसे नेता के रूप में पेश किया जा रहा है जो कठिन परिस्थितियों में भी लोगों के लिए काम करते हैं। 2013 की एक घटना का हवाला दिया गया, जब एक निर्माण स्थल के निरीक्षण के दौरान उनके कपड़े पसीने से भीग गए थे। उन्होंने कथित तौर पर कहा था कि मौसम कितना भी गर्म क्यों न हो, लोगों के लिए जो काम जरूरी है, वह किया जाना चाहिए।

दक्षिण कोरिया में गर्मी से संबंधित 20 से अधिक मौतें दर्ज की गई हैं, हालांकि उत्तर कोरिया ने अभी तक ऐसा कोई आंकड़ा जारी नहीं किया है। इस बीच, वानसान कालमा कोस्टल टूरिस्ट जोन के समुद्र तटों और प्योंगयांग के वाटर पार्कों में भी गर्मी से राहत पाने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ रही है।

एच1 बी वीजा ग्रेस अवधि खत्म करने से कुशल पेशेवरों की संख्या में आएगी कमी

वाशिंगटन। अमेरिका में नौकरी छूटने के बाद रोजगार तलाशने वाले एच1 बी वीजा धारकों के लिए 60 दिन की ग्रेस अवधि खत्म करने के प्रस्ताव से बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होगा और खासकर भारत से आने वाले अत्यधिक कुशल पेशेवरों की संख्या में कमी आएगी। विशेषज्ञों ने आशंका जताई है। एच1 बी रोजगार वीजा के सबसे बड़े लाभार्थियों में भारतीय नागरिक शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका के गृह विभाग ने 60 दिन की ग्रेस अवधि खत्म करने का प्रस्ताव दिया है। यह अवधि एच1 बी वीजा कामगारों और अन्य वैध अप्रवासियों को नौकरी के अवसर खत्म होने के बाद अमेरिका में रहने की अनुमति देती है, ताकि वे नये रोजगार की तलाश कर सकें, अपनी आव्रजन स्थिति बदल सकें या अमेरिका छोड़ने की तैयारी कर सकें। व्हाइट हाउस के पूर्व सलाहकार अजय जैन भूटोरिया ने कहा कि मौजूदा 60 दिन की ग्रेस अवधि को पूरी तरह खत्म करना गंभीर और पीछे ले जाने वाला कदम है, जो कानूनी प्रवासियों को सीधे नुकसान पहुंचाता है। रिपोर्ट के मुताबिक एक अमेरिकी वकील ने कहा कि सभी स्टार्टअप संस्थापक अपनी कॉर्पोरेट नौकरियां छोड़कर नए उद्यम शुरू करने के लिए 60 दिन की ग्रेस अवधि का इस्तेमाल अपनी स्थिति बदलने संबंधी याचिकाएं दाखिल करने में करते हैं।

अंतरिक्ष अभियान को झटका : चीनी राकेट हवा में उड़ते ही बना आग का गोला

बीजिंग

चीन के अंतरिक्ष कार्यक्रम को एक बड़ा झटका लगा है, जब उसका लान्ग मार्च-7ए राकेट एक सैटेलाइट को अंतरिक्ष में स्थापित करने के दौरान असफल हो गया। दक्षिणी चीन के हैनान प्रांत स्थित वेनचांग अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र से किया गया यह प्रक्षेपण शुरुआती चरणों में ही विफल हो गया। उड़ान भरने के करीब डेढ़ मिनट बाद ही राकेट अचानक हवा में टूट गया और उसमें जोरदार विस्फोट हो गया। इस हादसे में राकेट के साथ चीन का महत्वपूर्ण झोंगशिंग-4बी कम्युनिकेशन सैटेलाइट भी पूरी तरह नष्ट हो गया है। गनीमत यह रही कि इस मिशन में कोई मानव सवार नहीं था, जिससे किसी के भी हताहत होने की खबर नहीं है। अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की है कि दुर्घटना के कारणों की गहराई से जांच शुरू कर दी गई है।

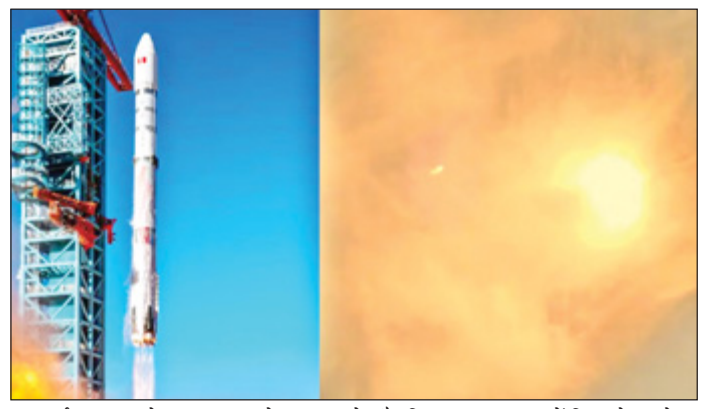

यह विफलता बीजिंग के लिए चिंता का विषय है क्योंकि लान्ग मार्च-7ए एक स्थापित और भरोसेमंद राकेट माना जाता था। साल 2020 में अपनी पहली उड़ान भरने और शुरुआती दौर की एक असफलता के बाद से इस राकेट परिवार ने 12 से अधिक सफल अभियानों को अंजाम दिया था। हालांकि, इस साल जनवरी में लान्ग मार्च-3बी के असफल होने के बाद यह इस सीरीज के राकेट की दूसरी बड़ी विफलता है। हालिया अभियान के तहत भेजा जाने वाला झोंगशिंग-4बी एक उच्च क्षमता वाला संचार उपग्रह था, जिसका मुख्य उद्देश्य दूरसंचार और प्रसारण सेवाओं को बेहतर बनाना था। योजना के मुताबिक राकेट को इस उपग्रह को निर्धारित कक्षा तक पहुंचाना था, लेकिन उड़ान के मात्र 85 से 90 सेकंड बाद ही इसमें गंभीर तकनीकी खराबी आ गई। सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों पर सामने आए वीडियो में राकेट को सामान्य रूप से उड़ान भरते और फिर अचानक हवा में बिखरते हुए देखा जा सकता है। फिलहाल तकनीकी खामी के सटीक कारणों का खुलासा नहीं हो सका है, और विशेषज्ञों का मानना है कि औपचारिक जांच रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति पूरी तरह साफ हो पाएगी। इस ताजा दुर्घटना के बाद चीन के आगामी अंतरिक्ष अभियानों, विशेषकर चंद्र मिशनों पर इसके असर को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। चीन आने वाले हफ्तों में अपने लान्ग मार्च-5 राकेट के माध्यम से चांग ई-7 मिशन को लान्च करने की योजना बना रहा है, जिसका उद्देश्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर रोबोटिक यान उतारना है। चूंकि लान्ग मार्च-5 और हाल ही में असफल हुआ लान्ग मार्च-7ए कुछ तकनीकी स्तर पर समानताएं साझा करते हैं, इसलिए अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के बीच यह चिंता है कि क्या इस घटना से आगामी मून मिशन में कोई देरी हो सकती है।

इंसान के डीएनए में मिले दो बिल्कुल अनजान पूर्वजों के निशान

कैलिफोर्निया

यूनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया के रिसर्चर्स को इंसान के डीएनए में दो बिल्कुल नए और अनजान पूर्वजों के निशान मिले हैं, जिनके कोई फासिल या डीकोड किए गए डीएनए आज दुनिया में मौजूद नहीं हैं। इन रहस्यमयी पूर्वजों को वैज्ञानिक घोस्ट एंसेस्टर कह रहे हैं। यह महत्वपूर्ण खोज बताती है कि मानव विकास एक सीधी रेखा में नहीं हुआ, बल्कि यह एक बहुत जटिल नेटवर्क है जिसमें कई पुरानी प्रजातियों का आपस में मिलाप हुआ। इन प्राचीन समूहों के जेनेटिक अंश आज भी माडर्न इंसानों में मौजूद हैं, जो मानव विकास की पुरानी थ्योरी को एक नया मोड़ देते हैं। होमो सेपियंस भले ही आज धरती पर अकेली मानव प्रजाति हो, लेकिन प्राचीन काल में हमने यह धरती निएंडरथल और डेनिसोवन जैसी कई अन्य होमिनिन प्रजातियों के साथ साझा की थी। पिछली स्टडीज ने यह स्पष्ट कर दिया है कि माडर्न इंसानों ने इन प्रजातियों के साथ संबंध बनाए और बच्चे पैदा किए, जिसके आनुवंशिक निशान आज भी बहुत से लोगों के डीएनए में मिलते हैं। दीपक वर्मा बताते हैं कि यह नई स्टडी बताती है कि कम से कम दो और अनजान मानव समूह अस्तित्व में थे, जिन्होंने हमारे पूर्वजों को अपना डीएनए पास किया था। डीएनए सीक्वेंसिंग जैसी आधुनिक तकनीकों ने लाखों साल पुराने इतिहास को खोजना आसान कर दिया है। इनमें से एक अनजान पूर्वज ने अफ्रीका में माडर्न इंसानों के पूर्वजों के साथ संबंध बनाए थे, जो लगभग पचास हजार साल पहले हुआ था। यह घटना होमो सेपियंस के यूरोप और एशिया में बड़े माइग्रेशन से पहले की है। इस प्रजाति से मिले जींस आज सभी इंसानों के डीएनए का लगभग एक प्रतिशत हिस्सा हैं, जो निएंडरथल डीएनए के बराबर माना जाता है। रिसर्चर्स की गणना के अनुसार, यह रहस्यमय मानव प्रजाति लगभग आठ लाख साल पहले अलग हुई थी, ठीक उसी समय जब निएंडरथल और डेनिसोवन भी एक-दूसरे से अलग हुए थे। दूसरा पूर्वज, जिसे सुपर आर्कटिक पूर्वज का नाम दिया गया है, पहले वाले से भी ज्यादा रहस्यमय और पुराना है। यह मानव प्रजाति लगभग अठारह लाख साल पहले अन्य होमिनिन से अलग हुई थी। करीब दो लाख साल पहले यूरेशिया में इन्होंने डेनिसोवन प्रजाति के साथ संबंध बनाए, और इस रास्ते से प्राचीन डीएनए के कुछ हिस्से माडर्न इंसानों के जीनोम में हमेशा के लिए पहुंच गए। यूनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया की प्रोफेसर प्रिया मूरजानी और जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटी के रिसर्चर अर्जुन बिडंडा सहित विशेषज्ञ बताते हैं कि मानव विकास एक सीधे पारिवारिक पेड़ जैसा नहीं है, बल्कि यह एक जटिल नेटवर्क है। निएंडरथल डीएनए आज अफ्रीका के बाहर रहने वाले ज्यादातर लोगों में एक से दो प्रतिशत पाया जाता है, जो इम्यून सिस्टम, त्वचा के रंग और बीमारियों के जोखिम को प्रभावित करता है। डेनिसोवन डीएनए एशिया और ओशिनिया के लोगों में मौजूद है। यह भी दिलचस्प है कि निएंडरथल और डेनिसोवन ने आपस में भी संबंध बनाए थे, जिसका सीधा प्रमाण साइबेरिया की डेनिसोवा गुफा में मिली एक महिला के फासिल से मिलता है। इन घोस्ट पूर्वजों की सटीक पहचान अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन उनके अलग होने की तिथियां मिडल प्लेइस्टोसिन के होमो समूहों (लगभग 8 लाख साल पहले अफ्रीका में) और होमो इरेक्टस (लगभग 18 लाख साल पहले यूरेशिया में) से मेल खाती हैं।